

Title: Regarding ban on common people for passing cantonment area in Varanasi.

श्री रामकिशुन (चन्द्रौली): माननीय सभापति जी, पूरे देश में जो छावनी परिषद हैं, उनमें से आम आदमी को आने-जाने के लिए, नागरिकों को आने-जाने के लिए रास्ता है, लेकिन दुर्भाग्य है कि वाराणसी जनपद के वाराणसी छावनी क्षेत्र के अंदर करियप्पा मार्ग से आम नागरिकों के सामान्य रूप से आने-जाने पर आंशिक प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। उस मार्ग से बड़ी गाड़ियों से लोग नहीं आ-जा सकते हैं। लाखों नागरिक प्रति दिन उस रास्ते का उपयोग कर के जिला मुख्यालय जाते और आते हैं, लेकिन सेना के अधिकारियों के कुछ गलत निर्णय के कारण वहां के नागरिकों को प्रताड़ित और उत्पीड़ित किया जाता है।

महोदय, अगर कोई व्यक्ति साइकिल से जाता है और करियप्पा मार्ग के गेट पर कोई साइकिल पर चढ़कर निकले, तो वहां के सेना के अधिकारी या कर्मचारी उस व्यक्ति को प्रताड़ित करते हैं और उन्हें साइकिल से उतार कर के और साइकिल उठाकर जाने के लिए मजबूर करते हैं। उस स्थान पर कोई भी व्यक्ति अपनी सवारी गाड़ियों से, फिर चाहे वह साइकिल हो या मोटर साइकिल हो, उससे सीधे चढ़कर उस गेट से नहीं निकल सकता है, जबकि देश के अन्य भागों में जो छावनी परिषद हैं, चाहे वह लखनऊ की छावनी परिषद हो या पटना की छावनी परिषद् हो, उससे चार पहिए वाली गाड़ियां आती और जाती हैं, लेकिन बनारस में करियप्पा मार्ग को आंशिक रूप से बन्द करने से बनारस के लाखों नागरिकों को आने-जाने में दिक्कत हो रही है।

महोदय, वाराणसी, देश की सांस्कृतिक और धार्मिक राजधानी है। उसका देश में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए मैं, आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहता हूं कि इस देश से अंग्रेज तो देश से चले गए, लेकिन उनके बनाए कानून आज भी देश में जिस प्रकार से चल रहे हैं और उन कानूनों के आधार पर जिस प्रकार से सेना के अधिकारी और कर्मचारी आम नागरिकों का उत्पीड़न करते हैं, वह एक गम्भीर मामला है। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहता हूं कि सेना की बाउंड्री से सटा हुआ फुलवरिया गांव से होता हुआ एक संकरी रास्ता है। सेना की उस बाउंड्री को यदि थोड़ा चौड़ा कर दिया जाए या हटा दिया जाए, तो करियप्पा मार्ग से न जाकर आम जनता उसके बगल से भी आ जा सकती है। फिर वह रास्ता भी उसी करियप्पा मार्ग से जाकर मिलता है। इस प्रकार से लाखों लोगों के सामने प्रति दिन जो गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं, उसका समाधान हो जाएगा।

महोदय, बीमारी आदि के समय, बीमार बच्चों को ले जाने और बच्चों को स्कूल-कॉलेज जाने में बहुत परेशानी होती है। जो माताएं और बहनें साइकिलों से जाती हैं, उन्हें उस गेट पर उतर कर के उन्हें जाना-आना पड़ता है। वे अपने ही देश में एक तरह से गुलामी महसूस करती हैं। पांच मिनट के लिए अथवा एक सैकिंड के लिए ही सही, लेकिन वे गुलामी तो महसूस करती ही हैं। यह गम्भीर लोक महत्व का मामला है। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार के संज्ञान में लाना चाहता हूं और रक्षा मंत्री जी से मांग करता हूं कि इस ओर ध्यान देकर करियप्पा मार्ग को पूर्ण रूप से आम जनता के लिए खोलें, जिस प्रकार से वह पहले जी.टी. रोड के रूप में प्रयुक्त होता रहा था जैसे पहले आम जनता के लिए आने-जाने के लिए खुला रहता था, वैसे ही खोलने का काम करें। आपने समय दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN : The House stands adjourned to meet tomorrow, the 17th March, 2011 at 11 a.m.

19.08 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Thursday, March 17, 2011/Phalguna 26, 1932 (Saka).

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Speech was laid on the Table

* Speech was laid on the Table